ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2023; 9(10): 202-211
www.allresearchjournal.com
Received: 14-08-2023
Accepted: 20-09-2023

डॉ. वर्षा राहुल
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, डी0वी0 कॉलेज उरई, जालौन, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. वर्षा राहुल
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, डी0वी0 कॉलेज उरई, जालौन, उत्तर प्रदेश, भारत

झाँसी मण्डल में कौशल दक्ष प्रशिक्षणार्थियों का रोजगार सृजन एंव उनकी स्थिति

डॉ. वर्षा राहुल

सारांश
कौशल विकास संकल्पना से तात्पर्य उद्योगों के लिए आवश्यकतानुसार, बडे पैमानें पर, रोजगार संम्बंधी कौशल को निखारनें और युवाओं को रोजगार प्राप्त करनें में मदद करता है और राष्ट्र निर्माण के लिए उनको प्रोत्साहित करता है।
उपरोक्त संकल्पना को साकार करनें हेतु अब हमें स्वावंलम्बी अर्थात आत्मर्निभर भारत की आवश्यकता है। यदि अब भी हम स्वावलम्बी ना बन पायें तो पुनः गुलाम बन जायेगें। अतः देश को विकसित देशों की श्रेणी में खडा करनें हेतु बहुत जरूरी है कि हम अब हर छेत्र में कौशल युक्त हो देश को आत्मर्निभर बनायें । यदि विश्व के आर्थिक पहेलुओं पर गौर किया जाये तो वें देश जो आज अपने को मजबूती से कायम किये हुयें है। वें भी आर्थिक उथल पुथल में फंसे थे। किन्तु उन्हें एक विकल्प स्वावलम्बीता ने मजबूती प्रदान की, और वे तेजी से हर छोटे से छोटे क्षेत्र में कुशल होते गये।

कूटशब्द : कौशल, श्रमशक्ति, दक्ष, बेरोजगारी, प्रशिक्षण, झाँसी मण्डल।

प्रस्तावना
कौशल शब्द की उत्पत्ति के विषय में सर्वप्रथम चर्चा प्रो0 एडम स्मिथ ने की। उन्होनें न केवल इससे आर्थिक जगत को परिचित कराया बल्कि इसे विशिष्टीकरण शब्द से भी सम्बोधित किया। राष्ट्रों की संपदा नामक ग्रंथ में स्मिथ लिखतें है कि, प्रत्येक उद्यमी निरन्तर इस प्रयास में रहता है कि वह अपनी निवेश धनराशि पर अधिक से अधिक लाभ अर्जित कर सकें। यह कार्य वह अपने लिए केवल अपने भले की कामना के साथ करता है न कि समाज के कल्याण के लिए ।
किन्तु यह भी सच है कि अपने भले के लिए ही वह अपने व्यवसाये को अधिक से अधिक आगे ले जाने के लिए उत्पाद और रोजगार के अवसरों को ज्यादा से ज्यादा विस्तार देनें का प्रयास करता है। किन्तु इस प्रक्रिया में देर सवेर समाज का भी हित साधन होता रहता है।1 स्मिथ के अनुसार, समृद्वि का पहला कारण श्रम का अनुकूल विभाजन है। यहाँ अनुकूलता का आशय है किसी भी व्यक्ति की कार्यकुशलता का सदुपयोग करते हुए उसे अधिकतम उत्पादक बनाने से सम्बन्धित है। वह उत्पादन क्षेत्र के विस्तार के स्थान पर उत्पादन के विशिष्टीकरण करने के पक्ष में थे। ताकि मशीनी कौशल एंव मानवीय श्रम का अधिक से अधिक लाभ उठाया जा सकें ।2
भारत की 1.3 बिलियन आबादी में से अधिकांश लोग 25 साल से भी कम आयु के है। अनुमान है कि अगले साल उक्त आयु 25 से बढकर 29 हो जायेगी किन्तु अन्य देशों की तुलना में हम फिर भी युवा देश कहलायेगें। जैसे अमेरिका की औसत आयु 40 होगी, युरोप की 46 और जापान की औसत आयु 47 होगी। इन परिस्थितियों में हम अपने युवा वर्ग को श्रम शक्ति के उचित तरिके से तैयार करने में बल दे सकते है। किन्तु आगे जनंसख्या का लाभांश हमें हानि ही पहुँचायेगा।
अतः उचित वृद्वि में पहुँचने के लिए यह जरूरी है कि हमें अपने श्रम शक्ति को रोजगार पाने लायक, कौशल सम्बन्धी जानकारी देना होगा ताकि कुशल कामगार देश के विकास में प्रभावी योगदान प्रदान कर सकें और देश की जनता उसका उचित लाभ उठा सकें। कृषि प्रधानंता वाला हमारा भारत देश आज युवाओं का देश कहा जाता है क्योंकि कुल आबादी का 65 प्रतिशत जनसख्यां जिनकी आयु 35 वर्ष से कम है। इसका तात्पर्य कुल जनसख्या का 65 प्रतिशत जनसख्या कार्यशील वर्ग का है जो उत्पादकता में वृद्वि कर देश को विकसित श्रेणी में ला सकता है।

इतनी बड़ी कार्यशील जनसख्यां हमारी ताकत है किन्तु देश में इतने कार्यशील जनसख्या अर्थात श्रम बल के लिए श्रम अथवा रोजगार सृजन करना भी उतनी ही बड़ी चुनौती भी है। इस चुनौती का सामना करने हेतु भारत सरकार द्वारा कई योजनाओं एंव नितियों को कार्यान्वित किया गया है। किन्तु पूर्ण रूपेण रूप से कारगर साबित न हो पाया। तदउपरांत 15 जुलाई 2015 को कौशल सम्बन्धित योजना का उदघोष हुआ जिसे कौशल विकास के नाम से सम्बोधित किया गया। कौशल का तात्पर्य दक्षता से है किसी कार्य आदि में प्रवीण होनें की अवस्था ही कौशल है। रोजगार सम्बंधी कौशल का विकास करने और युवाओं को रोजगार प्रदान करने व उसे विकसित करने को कौशल विकास कहा जाता है। कौशल विकास से गरीबी को खत्म करने का लक्ष्य रखा गया है। यूँ देखा जाए तो हम भारतीय लोग स्वंम में ही किसी न किसी कार्य में दक्ष होते है। किन्तु सरकारी प्रमाण न होने के कारण हमारी दक्षता का मूल्य अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में नहीं मापा जा सका है।

अतः इस स्थिति में ठोस परिर्वतन की आवश्यकता थी। जिसे कौशल विकास के अर्न्तगत प्रशिक्षित करके ही पूर्ण किया जा सकता है। बेरोजगारी से निपटने के लिए किसी क्षेत्र में विशिष्टता अर्थात् कौशल प्रशिक्षण ही एक प्रमुख माध्यम है जिससे प्रशिक्षित व्यक्ति स्वंय के विकास के साथ–साथ देश का भी विकास कर सकेगा।

उसकी कार्य कुशलता बढ़ेगी और स्वरोजगार हेतु प्रेरित होगा। जिससे बेरोजगारी की समस्या और गरीबी की समस्या भी दूर हो सकेगी, क्योंकि किसी भी देश के आर्थिक विकास में गरीबी और बेरोजगारी दो प्रमुख समस्या बाधक के रूप में कार्य करती है। इसलिए इस हेतु निवारण की अतिआवशयकता थी।

इस योजना के उचित संचालन हेतु राष्ट्रीय कौशल विकास एंव उद्यमिता नीति 2015 को इस तरह कार्यान्वित किया गया जिससे देश में कौशल प्रदान करने के लिए चल रही विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ इसके अर्न्तगत आ जाए एंव उन्हें उचित मानकों के अनुरूप ढाला जा सकें। जिसके फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इसकी प्रासंगगिकता एंव मांग बनी रहें।3

नेशनल सैम्पल सर्वे एन0एस0एस0ओ0 के मुताबिक भारत देश में कुल जनसंख्या का मात्र 3.5 फीसदी युवा ही कौशल दक्ष है, जबकी चीन में 45 फीसदी, अमेरिका में 56 फीसदी, जर्मनी में 74 फीसदी, जापान में 80 फीसदी और दक्षिण कोरिया में 96 फीसदी लोग कौशल प्रशिक्षित है। इन आंकड़ों से ज्ञात होता है कि कौशल से युक्त युवा संख्या में हमारे यहाँ कमी तो है किन्तु वें पूर्णतया अकुशल नहीं है। हमारे बहुत से कार्य पीढ़ी दर पीढ़ी चलते आ रहें है जिससे व्यक्ति प्रशिक्षित हुआ हो अथवा नहीं किन्तु उस कार्य में वो दक्ष होता है जैसे– नाई, मोची, बढ़ई, मिस्त्रीगीरी, कढ़ाई–बुनाई, आचार–पापड़, खनसामा आदि।

ामलूवतकरू कौशल, श्रमशक्ति, दक्ष, बेरोजगारी, प्रशिक्षण, झाँसी मण्डल।

बढ़ती जनसंख्या और युवाओं में अवसाद आदि ने लोगो को गरीबी में जीवन जीनें पर मजबूर किया हुआ था। इस स्थिति से उभारने व प्रोन्नत हेतु भारत सरकार द्वारा कौशल विकास योजना निर्मित की गई जिसे 15 जुलाई 2015 को क्रियान्वित किया गया। इस सन्दर्भ में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि, ''ये सरकार गरीबी के खिलाफ एक जंग है और भारत का प्रत्येक गरीब और वंचित युवा इस जंग का सिपाही है।''

इस संर्दभ में उनका मुख्य उद्देश्य युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित करके उनके कार्यक्षमता को बढ़ाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंनें 2022 तक विभिन्न योजनाओं के माध्यम से 40करोड़ युवाओं को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा है। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के दृष्टिकोण से देखे तो भारत अन्य देशों को कौशल विकास कार्यक्रम के तहत करोंड़ों युवाओं की फौज उपलब्ध करा सकता है।

सरकार द्वारा निर्मित टारगेट को सरकार ने करोना की इस महामारी में भी पूर्ण करने का प्रयास पूरी निष्ठा के साथ किया। जहाँ एक तरफ बेरोजगारी की दर में वृद्धि हुई है, वहीं ऑनलाइन प्रशिक्षण की प्रक्रिया को प्रारंभ करके सरकार ने प्रक्रिया को शुचारू रूप से चलाने का प्रयास किया। तथा साथ ही ऑनलाइन रोजगार मेले का भी आयोजन किया गया। जिससे व्यक्ति बिना कहीं जाये, बिना परेशानी उठाये, प्रतिभाग लेके नौकरी प्राप्त कर सकता है।

कौशल विकास योजना के प्रति जागरूक भारतीय सरकार बड़ी ही सजगता एंव सहजता से कार्य को क्रियान्वित कर रही है जिसके सन्दर्भ में उन्होंनें केन्द्र व राज्य सरकारों के 11 मंत्रालय को सक्रिय व महत्वपूर्ण बनाया है जिसकें अर्न्तगत–रक्षा रेल प्रवासी भारतीय भारी उद्योग, स्वास्थ्य रसायन उर्वरक, इस्पात कोयला विद्युत उर्जा व सामाजिक न्याय को रखा गया।

कौशल विकास से सम्बन्धित इन मंत्रालयों के अर्न्तगत 24 लाख युवाओं को प्रशिक्षण व उद्यमी बनाने का ध्येय रखा गया। इस अवसर को प्राप्त कर, हर युवा स्वंम का विकास कर, अन्य का भी विकास कर सकेगा। प्रो0 एडम स्मिथ के कथानुसार, '' व्यक्ति को स्वतः छोड़ दो तो वह स्वंम के विकास के साथ–साथ दूसरों का भी विकास करेगा ''।

माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भी इस कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कहा था कि ''हम नही चाहते कि हर कोई पढ़ने के बाद नौकरी खोंजें हम चाहते है कि वें कौशल सीखें और स्वंम का विकास करें'', जिससे वो अन्य को भी प्रेरित कर सकें।

भारत देश में लगभग 10 करोड़ से ज्यादा युवाओं को कौशल प्रशिक्षण ग्रहण करने की जरूरत है। क्योंकि देश की अगर सर्वप्रथम कोई प्राथमिकता है तो वो है युवाओं को नौकरी व व्यवसाय प्रदान कराना। जिससे की वें अपने पांव में खड़े रह कर उत्पादन और मांग दोंनों में वृद्वि कर सकें।4

बीतें पाँच साल में कौशल विकास योजना एंव ऋण योजना के तहत लगभग 34 लाख प्रशिक्षित बेरोजगारों को उनके उत्थान हेतु कर्ज दिया गया है। हम सब जानतें है कि चीन अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में मैन्यूफेक्चरिंग हब के रूप में अपनी पहचान बनायें हुए है। उसी प्रकार हमें भी मानव संसाधन हब के रूप में विकसित होना होगा।

आज भारतीय अर्थव्यवस्था में युवाओं में अवसाद व हीनता की भावना व्याप्त होती जा रही है। जिसका कारण शायद असुरक्षा की भावना भी है, जिसे उनका विश्वास जीत करके ही सभांला जा सकता है। विश्वास उनके अवसर का, विश्वास उनके प्रोत्साहन का, विश्वास उनको संरक्षित करके आगे बढ़ानें का, इस परिपेक्ष्य में प्रशिक्षित होने से युवाओं को आमदनी तो मिलेगी ही, साथ ही साथ उनमें आत्मविश्वास की वृद्वि भी होगी।

भारत में कौशल विकास कार्यक्रम या योजना के अर्न्तगत चार अन्य योजनायें संचालित हो रही है–राष्ट्रीय कौशल विकास योजना, कौशल विकास और उद्यमिता के लिए राष्ट्रीय नीति, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना व कौशल ऋण योजना मुख्य रूप से सम्मिलत है।

इस प्रकार की योजनाओं से लाभान्वित युवाओं को निजी कम्पनियाँ लगभग 10 हजार से अधिक नौकरियों के अवसर प्रदान करेगी जिससे कम से कम 8 हजार रूपयें तक का भुगतान उन्हें प्राप्त होगा ।

कौशल विकास कार्यक्रम से सम्बन्धित विभिन्न योजनाओं ने देश के युवाओं को सीधे तौर पर काफी लाभ प्राप्त कराया है और वर्तमान में भी करा रहा है। इसके अर्न्तगत प्रशिक्षित अभ्यार्थियों को एक लक्ष्य या उचित मार्गदर्शन दिखा कर, आगे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। जिससे युवाओं में एक अलग तरह का उत्साह भी दिखाई देता है।

भारत में अब तक लगभग 16 लाख 61 हजार युवाओं ने अपने लक्ष्य हेतु कौशल केन्द्रों से लाभ अर्जित किया है। यदि आंकडों पर गौर फरमायें तो पायेगें कि कई कम्पनियाँ कौशल केन्द्रों को प्रोत्साहित कर रही है। क्योंकि वें चाहती है कि एक कुशल कामगार, जो सिर्फ कम समय में कुशल कार्य दक्ष हो, ऐसा कार्य इतनी निपुणता से कौशल केन्द्र ही करा पा रहा है, जो मजदूरों को प्रशिक्षित करके उसे बाजार में भेजता है।5

भारत सरकार की मन्सा बिल्कुल उचित है क्यूँकि युवाओ को रोजगार चाहिए और बाजार को कुशल कामगार, तो सिर्फ एक ही बाधा है ''वो है दक्ष कामगार की'', जिसको कौशल केन्द्रों के माध्यम से सुधारा जा सकता है। किन्तु इस ओर भारत की जनता का जागरूक होना भी उतना ही जरूरी है जितना की सरकारी मन्सा का सही होना। जब हम एक जुट होकर एक रूख में कार्य करते है तो धीरे–धीरे ही सही सफलता जरूर मिलती है।

प्रकृति ने हमें बनाया, हमें खानें के लिए एक मुँह और एक पेट दिया है किन्तु काम करने के लिए दो हाथ दियें है जिससे दोगूना उत्पादन कर हम अपने उत्थान के साथ–साथ समाज को भी उन्नत पथ पर ले जा सकते है ताकि बेरोजगारी को कम कर युवाओं को सही ढ़ंग के कार्य पर लगा सकें ।

यदि भारत को मद्देनजर रख कर देखें तो यहाँ बेरोजगारी की प्रवृत्ति मूलतः सरंचनात्मक है, यहाँ की जनसंख्या तो बडी है किन्तु इस बडी जनसंख्या या श्रमिकों को रोजगार के अवसर कम मिलते है या यूँ भी कह सकते है कि जो श्रमिक बाजार को चाहिए होते है उस मांग को भारत पूर्ण करने में असमर्थ था किन्तु अब इस ओर कारगर उपाये किये जा रहे है जैसे कौशल केन्द्रों का निर्माण।6

भारत जो विश्व के स्तर में एक उन्नत विकासशील अर्थव्यवस्था के तौर पर उभरा है किन्तु यदि रोजगार की दृष्टि से देश का विकास देंखें तो पायेंगें की ये अर्थव्यवस्था रोजगार विहीन प्रगति पथ पर अग्रसर है। किन्तु प्रश्न सिर्फ रोजगार का नही अपितु गुणवत्तापूर्ण रोजगार का भी है। वर्ष 2018 के आर्थिक सर्वेक्षण में करीब साढ़े सात करोड़ लोग ऐसे है जिन्हे रोजगार मिला हुआ है। तथा 24 करोड़ लोग ऐसे है जो कृषि कार्य में सलंग्न है।

एन0 एस0 एस0 ओ0 की रिपोर्ट के अनुसार भारत में बेरोजगारी दर 6.1 फीसदी है जो की बीते हुए पैतालीस वर्षों में सबसे अधिक अंकित की गई है। बेरोजगारी को शहरी बेरोजगारी व ग्रामीण बेरोजगारी से भी स्पष्ट कर सकते है। जो 7.8 और 5.3 फीसदी है।

इस बाबत यह भी कहा जा सकता है कि भारत में अल्प रोजगार की भी अवस्था व्याप्त है जिसका उदाहरण कृषि क्षेत्र है क्योंकि जो लोग कृषि क्षेत्र में अल्प रोजगार के रूप में लगे हुए है वे अपनी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं कर पा रहें है। ज्यादातर खेतों के मालिक अपने खेतों को बटाई पर दे देते है। जिस कारण से वे अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग नही कर पाते है।7

विश्व जानता है कि हम यानी भारत एक युवा देश है जिसे 27 वर्ष हाल ही में अकिंत किया गया जबकि चीन 35 वर्ष व जापान में 45 वर्ष आंकी गई है।8 युवा देश है तो कामगार भी उतने ही कर्मण होंगें क्योंकि युवाओं में ऊर्जा की कमी नहीं होती। यदि किसी चीज की कमी होती है तो वह दक्षता की है। अपनी क्षमता को उचित दिशा में खर्च न कर पाने के कारण ही व्यक्ति में आलस और विकृति उत्पन्न होती है। जिसे सिर्फ सही दिशा में व्यस्तता ही दूर कर सकती है।

तालिका 1: कार्यशील जनसंख्या का तुलनात्मक अध्ययन 2021–2022

क्र.सं.		कार्यशील जनसंख्या		
		भारत में	उत्तर प्रदेश में	झाँसी मण्डल में
1.	कुल कार्यशील कामगार	362,565,571	44,635,492	1,337,340
2.	पुरूष कामगार	273,209,976	37,420,299	1,082,187
3.	महिला कामगार	89,355,595	7,215,193	255,153
4.	कुल ग्रामीण कार्यशील	245,868,421	33,538,817	311,330
5.	ग्रामीण महिला कार्यशील	178,095,330	27,812,347	225,310
6.	ग्रामीण पुरूष कार्यशील	67,773,091	5,726,470	86,020
7.	कुल शहरी कार्यशील	116,697,150	11,096,675	576,183
8.	पुरूष कार्यशील	95,114,646	9,607,952	486,316
9.	महिला कार्यशील	21,582,504	1,488,723	89,867

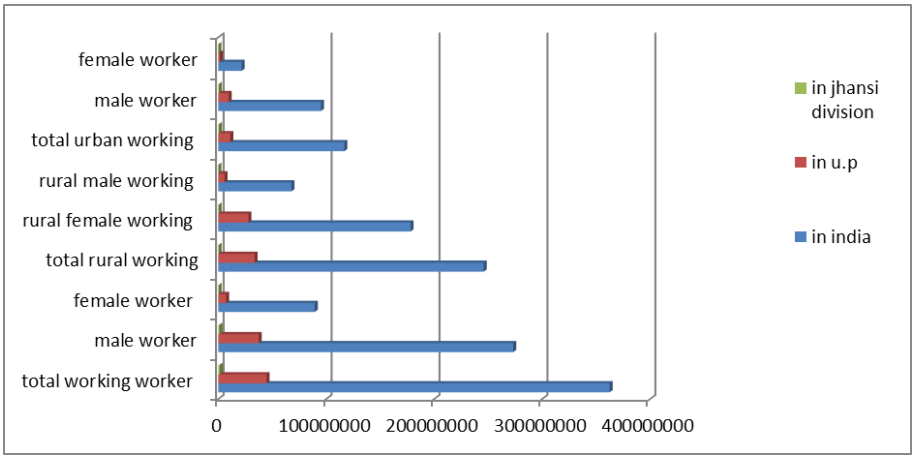

तालिका 2 झाँसी मण्डल की तहसीलवार कुल कार्यशील जनसंख्या एंव प्रतिशत 2021–2022

	1981		1991		2001		2011	
तहसील	जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
माधौगढ़	47793	29.75	57402	30.48	104354	35.17	72858	37.28
जालौन	52779	28.12	73488	31.73	86731	35.02	83283	30.26
कालपी	69412	31.70	102217	37.34	122189	38.12	15817	24.42
कोंच	72732	32.72	95218	35.07	103339	38.98	16945	25.91
उरई	60650	30.82	81611	32.08	106268	32.74	106872	36.12
जनपद जालौन	303366	30.75	409936	33.61	522881	35.95	620764	36.72
मौंठ	64183	29.36	105990	40.02	106650	39.51	107100	39.82
गरौठा	64410	30.75	99554	39.98	85710	42.62	87501	42.81
टहरौली	–	–	–	–	67045	44.34	65407	42.84
मऊरानीपुर	74842	32.30	108014	36.75	133934	40.27	134043	41.18
झाँसी	139170	29.02	186074	29.91	198307	25.09	62600	40.76
जनपद झाँसी	342605	30.13	499632	34.94	646007	37.02	814914	36.01
तालबेहट	60347	38.70	48792	24.65	111140	45.02	110031	44.12
ललितपुर	45159	41.78	135059	44.20	157900	38.91	180120	33.28
महरौनी	73568	37.92	130793	52.61	153325	47.15	143351	46.15
जनपद ललितपुर	229074	39.65	314644	41.84	422365	43.19	503351	41.45
झाँसी मण्डल	875045	32.40	1224212	35.99	1591253	38.09	1939029	63.55

स्रोतःप्राथमिक जनगणना सार, जनगणना कार्य निदेशालय उ0प्र0।

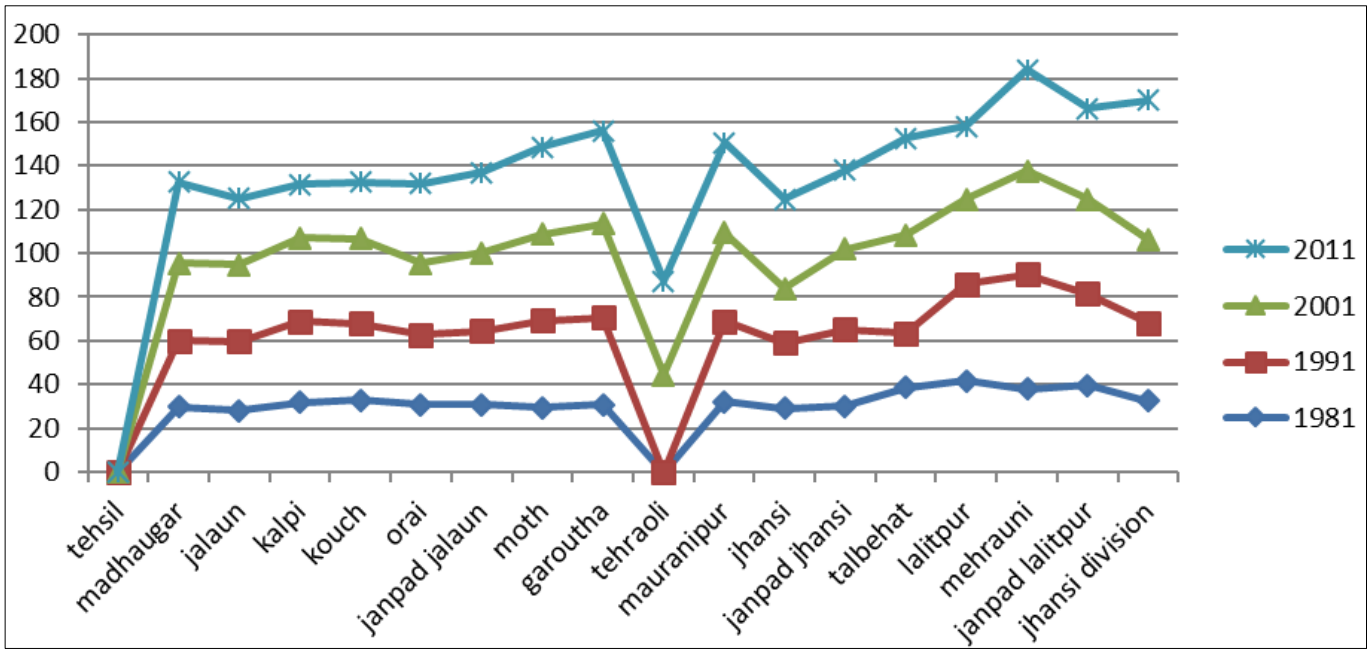

तालिका 3: झाँसी मण्डल में कार्यशील जनसंख्या पर गैर कार्यशील जनसंख्या की निर्भरता–2021–2022

वर्ष	कुल जनसंख्या	कार्यशील जनसंख्या	कार्यशील जनसंख्या प्रतिशत	गैर कार्यशील जनसंख्या	गैर कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत
1961	1750647	698900	39.92	1051747	60.08
1971	2120548	802496	37.84	1318052	62.16
1981	2700917	875045	32.40	1825872	67.60
1991	3401118	1224212	35.99	2176906	64.01
2001	4177117	1591253	38.09	2585864	61.91
2011	4910169	1939029	39.49	2971140	60.50

स्रोतःप्राथमिक जनगणना सार, जनगणना कार्य निदेशालय उत्तर प्रदेश

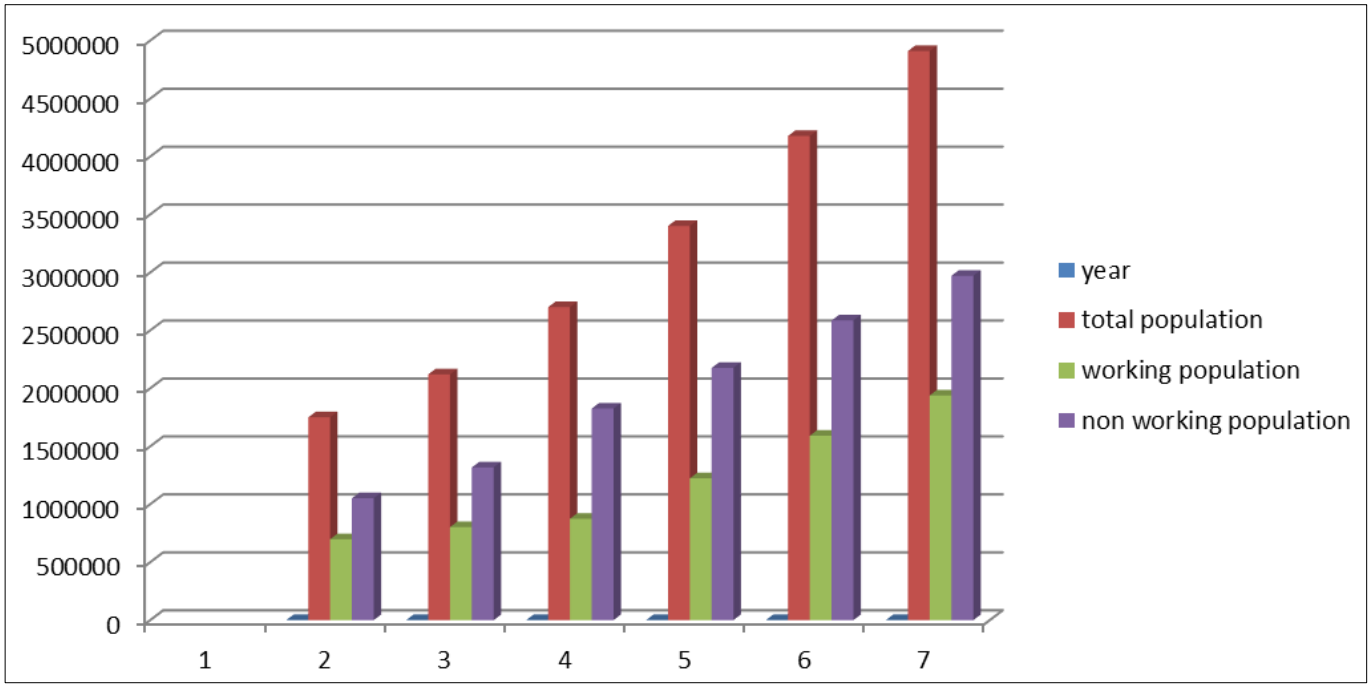

तलिका 4: झाँसी मण्डल में जिलेंवार कार्यशील जनसंख्या एंव प्रतिशत 2020

जिला	कुल जनसंख्या	कुल कार्यशील	प्रतिशत	कार्यशील पुरूष	प्रतिशत	कार्यशील महिला	प्रतिशत
झाँसी	1998603	814914	40.76	565357	28.28	249557	12.48
जालौन	1689974	620764	36.72	470969	27.86	149795	08.86
ललितपुर	1221592	503351	41.45	326783	26.75	176568	14.45
झाँसी मण्डल	4910169	1939029	63.55	1363109	27.76	575920	35.79

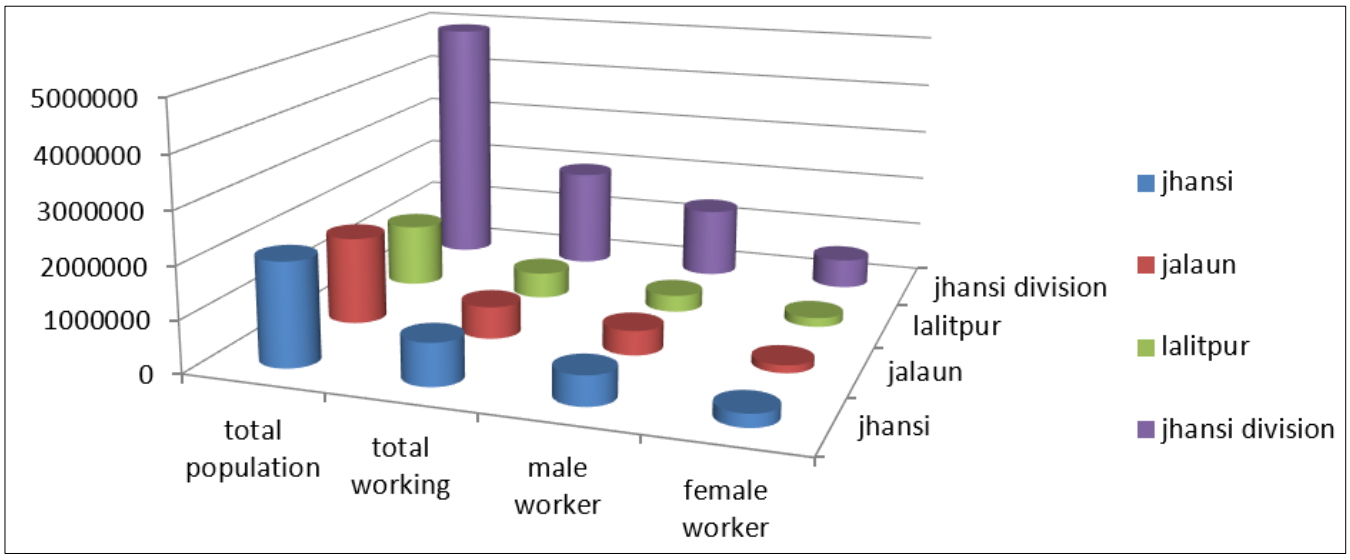

उक्त तालिकाओं व ग्राफ में विशेषतया रूप से कार्यशील जनसंख्या के आँकड़ों को विशलेषित किया गया है जिसमें कुल जनसंख्या का केवल 40 प्रतिशत व्यक्ति ही कार्य पर लगे हुए है जबकि इसी में विलय महिलाओं का प्रतिशत केवल 12 है जो स्थिति को आइने की तरह साफ–साफ प्रदर्शित करता है।

भारत में रोजगार व कामगार संख्या को देंखें तो अवगत होता है की भारत में बेरोजगारी चरम सीमा पर है, तथा गौरतलब है कि कोविड–19 महामारी के कारण यह और बढ़ गई है। किन्तु राज्यों की आपस में तुलना करे तो उत्तर प्रदेश की स्थिति ज्ञात होती है और यदि उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड में झाँसी मण्डल को अकिंत करें तो पाते है कि यहाँ की स्थिति रोजगार की दृष्टि से सोचनीय अवस्था में है। किन्तु उससे भी बुरी स्थिति यहाँ की महिलाओं की है जिन्हें सामाजिक दायरों की उलहाना देकें रोका जाता है।

जब हम रोजगार या कार्य उन्नत की बात करते है तो सिर्फ पुरूषों की ही छवि सामने आती है। ऐसा क्यों ? शायद हमारा माइन्ड सैट है।

सामाज में महिला को आगे आने की थोड़ी अनुमति तो हो गई है किन्तु रोजगार यदि सरकारी है तो, समाज या परिवार विचार कर सकता है, पर यदि खुद के उद्यमिता की बात हो तो इसे परिहास में उड़ाया जाता है ''उद्योग चलाना वो भी महिलाओं से..... ''जबकि समाज में कई ऐसे उदाहरण है कि वें सफल उद्यमी बनी है किन्तु इन नामों को उंगलियों पर गिना जा सकता है।

झाँसी मण्डल में महिलाओं को यदि ऐसा करना है या व्यापार के

बारे में सोचना ही है तो वें अपने घर या यूँ कहें की पति के घर जा के सोचें व इस सोच को अंजाम दें, क्योंकि सामाज ऐसा ही सोचता है। इसके अलावा यह भी सोचा जाता है कि एक पिता उस लड़की को व्यापार के लिए प्रोत्साहित कर कुछ धन उसे दे या विवाह हेतु उसके लिए दहेज इकट्ठा करें।

सरकार की नीतियां व योजनायें सामाज को उन्नत करने के लिए कटिबद्ध होती है, एंव अग्रसर भी होती है किन्तु इनकी विफलता व सफलता देश की जनता के द्वारा निर्धारित होती है। योजनायें बनती है किन्तु जनता या तो उनसे अनभिज्ञ रहती है या फिर वें उसका फायदा नहीं उठाना चाहतें है।

झाँसी मण्डल में क्षेत्रीय असंतुलन को मिटाने हेतु सरकार ने महिलाओं के लिए 2013 में महिला उद्यमी प्रोत्साहन योजना का शुभारंम्भ किया। जिसमें उन्हें ऋण की छुट भी प्रदान की गई। इस योजना के तहत महिला को इंटरमीडिएट पास होना चाहिए। उक्त सब सुविधाओं के बावजूद यहाँ महिला उद्यमिता को उचित नहीं ठहराया जाता। यदि वो शादीशुदा है तो उसके नाम पर उसका पति व्यापार करता है चाहें महिला की इच्छा हो अथवा न हो।

झाँसी मण्डल के पिछड़ेपन का कारण भूमि के अनुपजाऊ होना और पानी की कमी का होना भी माना जा सकता है। जो यहाँ के विकास पर दो तरफा प्रहार करती है। कभी ये क्षेत्र भी धन व प्राकृतिक सम्पदा से सम्पन्न था किन्तु इस क्षेत्र का इतना शोषण हुआ कि यहाँ के विकास पथ को अधमरा कर छोड़ दिया गया। कितनी मिलें स्थापित थी जो घाटे पर जा कर बन्द हो गई, हजारों श्रमिकों का रोजगार छीन गया लोग भूख से मरने लगे।9

पूर्व में किये गये शोध की समीक्षा

अजय गुप्ता –11.10.2019– ''भारत के सार्वजनिक उपक्रम में सर्वगीय प्रशिक्षण का आलोचनात्मक मूल्यांकन''

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इस देश में सार्वजनिक उपक्रमों का तीव्र गति से विकास हुआ है। भारत सरकार द्वारा दो महत्वपूर्ण औद्योगिक नीतियों की घोषणा की गई। इनमें से प्रथम औद्योगिक नीति 1984 में घोषित की गई जिसका प्रमुख उद्देश्य मुक्त व्यापार की अर्थव्यवस्था से छुटकारा पाना था। तथा द्वितीय औद्योगिक नीति की घोषणा 1956 में की गई जिसका प्रमुख उद्देश्य सार्वजनिक क्षेत्र का अधिक से अधिक विस्तार करना था।

औद्योगिक नीति प्रस्ताव 1956 के कारण ही आज राष्ट्र तीव्र औद्योगीकरण तथा आत्मनिर्भरता की तरफ अग्रसर हो पाया है। तथा राष्ट्र की खबरों रूपयों की धनराशि का विनियोग सार्वजनिक उपक्रमों में हुआ है। वर्तमान समय में सार्वजनिक उपक्रम देश की औद्योगिक अर्थव्यवस्था की राढ़ की हड्डी एंव प्रगति की तीव्र आकांक्षाओं का एक महत्तवपूर्ण आधार बन गया है।

अतः सार्वजनिक उपक्रम लोक उद्यम या उद्यम लोक एक बहु आयामी विषय तथा स्वंय एक विशिष्ट क्षेत्र रखता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में लोक उद्योगों के बढ़ते हुए क्षेत्र एंव महत्तव के कारण इस दिशा में जनसामान्य प्रशासकों, राजनीतिज्ञों, विद्यार्थियों तथा समाज के प्रबुद्ध वर्गों की रूचि बढ़ना स्वाभाविक है।

कादम्बरी नैनीवाडेकर –10.10.2016– **Effect of customized behavioral intervention on problem behaviors as distinguished from skill deficits in children with autism"

Distinguishing problem behaviors from deficits in skill behaviors precede planning or implementation of intervention programs for children with autism. This study seeks to examine the impact of a customized behavioral intervention on problem behaviors in children with autism, as distinguished from skill deficits.

The investigation covers the distinction of skill behaviors from problem behaviors in autism and the relationship between both. It examines the reduction of problem behavior with a consequent increase in skill behavior. Associated strategies and methods are also discussed.

Dash, manaswini -25.10.2016- "information integration modes and planning of skilled and less skilled readers"

The study was designed to investigate the influence of grade and reading status an attention, simultaneous, successive processes and planning within the theoretical framework of the pass model. The sample consisted of 80 children with 20 subjects from each of the following groups: (a) Grade 3 skilled readers, (b) Grade 3 less-skilled readers, (c) Grade 5 skilled readers, and (d) Grade 5 less skilled readers.

All subjects were screened on the basis of their performance and the Raven's colored progressive matrices and the Graded reading comprehension test from six oriya medium primary schools in puri town, 60 km from Bhubaneswar the state capital of Orissa. The skilled and the less skilled readers shared a relatively homogeneous sociodemographic background.

All subjects were administered a variety of tasks to tap subjects attention simultaneous and successive processing and planning skill. The tasks represented different levels of cognitive complexity.

Ambeth kumar R -02.08.2018- "influence of aerobic training skill training and combined aerobic and skill training on bio motors physiological and skill performance among basketball pliers

The Word Training occupies and indispensable part of human language since ancient time it denotes the process of preparation for some task this process invariably extends to a number of days and even months and years. The term "Training is widely used in sport.

There is, however, some disagreement among sport coaches and sports scientists regarding the exact meaning of this word. Some experts, especially belonging to sport medicine, understand spots training as basically doing physical exercise. Several terms used in trainings, like strength training, interval training technical and tactical training reflects this line of thinking.

Prabhu km (29-Apr-2016) "use of the radio in developing communication skill in English."

The basic assumption of this thesis, that the development of communication skill is and should be the prime aim of teaching learning a language (here specifically English) is one that is by now fairly well established in modern pedagogy.

However, linguistics which, as a modern science, informs much of the methodology of language teaching has not spoken with one voice as to what exactly communication means.

It can indeed be said that in the literature and linguistics and language teaching, there have been very few attempts to define communication skill as such compared with the attempts to restate terms such as language skill, communicative competence, communicative ability, communicative knowledge and performance. Moreover, these terms have been used with varying shades of meaning.

Neena mane (30-dec-2019)- " The importance of life skill and communication skills Evinced by the folktales of A K Ramanujan"

Life is the period between birth and death and its has different stages of existence from the moment of birth till that of death. The quality of life between these two moments needs to be studied as to whether time is spent in mere physical transactions alone or there is time set aside for mental, intellectual and spiritual evolution too.

The behavioral evolution is what concerns the present thesis. People grow and evolve into extraordinary types. This behavioral development takes place at four levels namely the social, emotional, intellectual and spiritual.

Growth has to be simultaneous in all the four aspects. Even if one of the aspects is not developed, it will affect other aspects too. This study does not analyses any of these spheres in depth because that rightfully belongs to the territory of psychology. The purview of the present thesis lies in pointing out that these spheres have been presents in folktales and how a development of these spheres can help on individual to attain perfection.

Nager, mahipal singh (12-Apr-2017) - "Development of education in the Indian army since independence"

Education helps in unfolding many individual qualities with the induction of modern and sophisticated weapons in the Armies of the world, the role of the army personal and concerning authorities become more and more complicated. Education not only broadens the outlook of the soldiers but helps them also to steps with the time to meet the challenges of new technology.

Education has many aspects. It has produce a concept of standard of living. All the factors which are responsible to build this concept contribute in a smaller or greater degree in its formation. Education aims at generating certain desirable learning outcomes in a individual. The opportunities of learning and the modes of teaching have a close relationship with the objectives of education which it seeks to achieve.

Rajesh umedgar aparnath (23-jul-2015)- "Growth and development of management education through distance learning in Indian-

"With globalization there has been continuous rise in demand for qualitative management education is continuously on rise due to rapidly increasing competition and development of new file." This is becoming very critical for developing country like India, where the government is trying to invite more and more companies ; to set up their unites in order to meet continuously increasing requirements of the large demand of the population. But, it is a matter of great concern that only 19% of the population has been able to get higher education.

There can be various reasons for this low penetration, like our youth having lot of other social commitments act, however, the very low figure is of great concern, especially when about 50% of country's population is between 18-35 years ranger and they are really need professional education so that , business community and industry can accommodate them more willingly. Under these circumstances, distance education has been proved to be a great help in order to reach the large number of people who are not able to pursue higher education through full time classroom based education on mode…….

Kamili, shamima (1-may-2015)- " Effectiveness of taining and development polices in select bank in J and K-

Every organization needs to be dynamic and growth oriented not only to with stand but to succeed in the fast changing and competitive, on organization is poised for the growth and dynamism only through efficient efforts of its human resources. Modern management achieves these objectives through HRD. The HRD system heavily depends upon the employee training and management development.

The system emphasizes on such process mechanisms as performance appraisal, career planning, employee training, organizational development, rewards, employee welfare and human resource information. All these process mechanisms are linked with corporate plans particularly human resource planning under HRD in general.

Nager, pramod kumar (29-mar-2014) "सहकारी प्रशासन एंव प्रशिक्षण : एक सैद्धान्तिक अध्ययन"–

बहुत विस्तृत और व्यापक अर्थ में सहकारीता की उत्पत्ति सहकार–सह+कार्य शब्द से हुई, जिसका आशय साथ मिलकर काम करने से है। इस अर्थ में सहकारिता का सिद्धान्त उतना ही प्राचीन है जितना कि स्वम मानव समाज। कारण, घरेलू और सामाजिक जीवन सहयोग पूर्ण कार्य पर आधारित रहा है।

वास्तव में यह मानव की सामूहिक प्रवृत्ति ही है, जिसने उसे साथ रहने, मिलकर कार्य करने और कठिनाई में पारस्परिक सहायता करने को उत्साहित किया है। आज भी मानव जीवन में यह मूल भावना उसी प्रकार से विद्यमान है जिस प्रकार से कि परम्परागत संस्थाओं में सामूहिक और सामुदायिक भावना।

पूर्व की भाँति आज भी सामाजिक और आर्थिक विषम परिस्थितियों से बचने का एक मात्र उपाय सहकारिता ही है। सहकारिता आन्दोलन ही अपने सदस्यों विशेषतः कमजोर वर्गो के विकास और कल्याण के लिए समर्पित आन्दोलन है।

उद्देश्य

1. झाँसी मण्डल में महिलाओं के प्रशिक्षण के पश्चात् उनके रोजगार क्षमता में वृद्वि का अध्ययन करना।
2. कौशल विकास से सम्बन्धित विभिन्न योजनाओं में से झाँसी मण्डल में संचालित परियोजनाओं का अध्ययन करना।

कार्यप्रणाली

1. **मेरे द्वारा चयनित शोध विषय :–** ''झाँसी मण्डल में कौशल दक्ष प्रशिक्षणार्थियों का रोजगार सृजन एंव उनकी स्थिति'' में मैनें विवरणात्मक व सर्वेक्षण शोध प्रारूप (descriptive or survey research design) का प्रयोग किया है। जिसके अन्तर्गत मैने साधन (tool) के रूप में प्रश्नावली अनुसूची का निर्माण किया और इसे यादृच्छिक नमूना (random sampling) के रूप में क्रियान्वित किया है।
2. इस शोध में मैनें प्राथमिक संमक एंव द्वितीयक संमक (primary data or secendry data) दोनों का प्रयोग, शोध की मांग स्वरूप किया है।
3. इस अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु मैनें काई–स्क्वायर टेस्ट का भी प्रयोग किया है। ताकि उचित समीक्षा प्राप्त हो सकें। इस हेतु मैनें आँकड़ों को उचित स्वरूप प्रदान करने के लिए एक्सल और एस.पी.एस.एस शॉफ्टवेयर का प्रयोग किया।
4. मैनें शोध को आकर्षित रूप प्रदान करने के लिए व आसानी से समझने के लिए, समंकों का सम्पादन, सारणियों, चित्रों व ग्राफों आदि का प्रयोग आँकड़ों के आधार पर किया है।

ताकि शोधार्थी अपनी सतर्कता को और शोध की समस्या को, उचित रूप से विश्लेषित कर सकें।

परिणाम और चर्चा

कौशल विकास के अन्तर्गत प्रशिक्षण के पश्चात् प्रशिक्षणार्थियों के जीवन स्तर में वृद्धि हुई।

Case processing summary

	Case					
	Valid		Missing		Total	
	N	percent	N	percent	N	Percent
Place Q	219	100.0	0	0.0	219	100.0

Place Question cross tabulation

	Question				
Place	Yes	Little bit	No	Don't know	Total
Jhansi	15	52	2	4	73
Jalaun	19	38	1	16	74
Lalitpur	4	57	4	7	72
Total	38	147	7	27	219

Chi-Square test

	Value	df	Asymp.sig. (2-sided)
Pearson chi-square	24.088 [a]	6	.001
Likelihood Ratio	25.736	6	.000
Linear by linear Association	3.644	1	.056
N of valid cases	219		

a.3 cells (25.0%) have expected count less than 5. The minimum expected count is 2.30.

परिगणित मान x^2 =24.088 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम सारणी मान 12.592 से अधिक है अतः यह .05 स्तर पर सार्थक है व 16.812 से अधिक है अतः यह .01 स्तर पर सार्थक है। उक्त विवरण को यदि क्षेत्रों के आधार पर इस परिकल्पना में कौशल योजना से प्रशिक्षणार्थियों के जीवन स्तर में वृद्धि हो रही है। यानि H_1 स्वीकृत हो गया और H_0 अस्वीकृत हो गया ।

Case processing summary

	Case					
	Valid		Missing		Total	
	N	Percent	N	Percent	N	Percent
Gender Q	219	100.0	0	0.0	219	100.0

Gender Question cross tabulation

	Question				
	Yes	Little bit	No	Don't know	Total
Male	24	94	6	21	145
Female	14	53	1	6	74
Total	38	147	7	27	219

Chi-Square test

	Value	df	Asymp.sig. (2-sided)
Pearson chi-square	3.300 [a]	3	.348
Likelihood Ratio	3.600	3	.308
Linear by linear Association	2.273	1	.132
N of valid cases	219		

2 cells (25.0%) have expected count less than 5. The minimum expected count is 2.37.

परिगणित मान x^2 = 3.300 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम सारणी मान 7.815 से कम है अतः यह .05 स्तर पर सार्थक नहीं है व 11.341 से कम है अतः यह .01 स्तर पर सार्थक नहीं है। उक्त विवरण को यदि लिंग के आधार पर मापें तो इस परिकल्पना में कौशल योजना से प्रशिक्षित महिलाओं के जीवन स्तर में वृद्धि नहीं हो रही है। यानि H_1 अस्वीकृत हो गया और H_0 स्वीकृत हो गया है।

Case processing summary

	Case					
	Valid		Missing		Total	
	N	percent	N	percent	N	Percent
Age group Q	219	100.0	0	0.0	219	100.0

Age group Question cross tabulation

	Question				
Age group	Yes	Little bit	No	Don't know	Total
15-20years	22	91	3	20	136
20-25years	13	47	3	7	70
25-30years	2	5	0	0	7
30-35years	1	4	1	0	6
Total	38	147	7	27	219

Chi-Square test

	Value	df	Asymp.sig. (2-sided)
Pearson chi-square	7.539[a]	9	.581
Likelihood Ratio	7.574	9	.578
Linear by linear Association	1.590	1	.207
N of valid cases	219		

a.10 cells (62.50%) have expected count less than 5. The minimum expected count is .19.

परिगणित मान x^2 = 7.539 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम सारणी मान 16.919 से कम है अतः यह .05 स्तर पर सार्थक नहीं है व 21.666 से कम है अतः यह .01 स्तर पर सार्थक नहीं है। उक्त विवरण को यदि आयु वर्ग समूह के आधार पर मापें तो इस परिकल्पना में कौशल योजना से प्रशिक्षित महिलाओं के जीवन स्तर में वृद्धि नहीं हो रही है। यानि H_1 अस्वीकृत हो गया और H_0 स्वीकृत हो गया ।

Case processing summary

	Case					
	Valid		missing		Total	
	N	percent	N	percent	N	Percent
Marital status Q	219	100.0	0	0.0	219	100.0

Marital status Question cross tabulation

	Question				
Marital status	Yes	Little bit	No	Don't know	Total
Married	4	13	0	0	17
Divorce	0	0	1	0	1
Unmarried	34	134	6	27	201
Total	38	147	7	27	219

Chi-Square test

	value	df	Asymp.sig. (2-sided)
Pearson chi-square	33.775 [a]	6	.000
Likelihood Ratio	12.963	6	.044
Linear by linear Association	2.433	1	.119
N of valid cases	219		

7 cells (58.3%) have expected count less than 5. The minimum expected count is .03.

परिगणित मान x^2 = 33.775 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम सारणी मान 12.592 से अधिक है अतः यह .05 स्तर पर सार्थक नहीं है व 16.812 से

अधिक है अतः यह .01 स्तर पर सार्थक है। उक्त विवरण को यदि वैवाहिक वर्ग समूह के आधार पर मापें तो इस परिकल्पना में कौशल योजना से अविवाहित प्रशिक्षित महिलाओं के जीवन स्तर में वृद्धि हो रही है। यानि H_1 स्वीकृत हो गया और H_0 अस्वीकृत हो गया ।

अशिक्षित महिलाओं को कौशल विकास योजनाओं के अर्न्तगत प्रशिक्षण के पश्चात् रोजगार के ज्यादा अवसर मिलें।

Case processing summary

	Case					
	Valid		missing		Total	
	N	percent	N	percent	N	Percent
Place Q	219	100.0	0	0.0	219	100.0

Place Question cross tabulation

	Question				
Place	Yes	Little bit	No	Don't know	Total
Jhansi	36	9	25	3	73
Jalaun	25	29	16	4	74
Lalitpur	18	4	42	8	72
Total	79	42	83	15	219

Chi-Square test

	value	df	Asymp.sig. (2-sided)
Pearson chi-square	46.605[a]	6	.000
Likelihood Ratio	45.597	6	.000
Linear by linear Association	14.145	1	.000
N of valid cases	219		

1 cells (8.3%) have expected count less than 5. The minimum expected count is 4.93.

परिगणित मान x^2 = 46.605 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम सारणी मान 12.592 से अधिक है अतः यह .05 स्तर पर सार्थक है व 16.812 से भी अधिक है अतः यह .01 स्तर पर सार्थक है। उक्त विवरण को यदि क्षेत्र के आधार पर मापें तो इस परिकल्पना में कौशल योजना से अशिक्षित महिलाओं को प्रशिक्षण के पश्चात् रोजगार के ज्यादा अवसर मिलें । यानि H_1 स्वीकृत हो गया और H_0 अस्वीकृत हो गया ।

Case processing summary

	Case					
	Valid		Missing		Total	
	N	percent	N	percent	N	Percent
Gender Q	219	100.0	0	0.0	219	100.0

Gender Question cross tabulation

	Question				
Gender	Yes	Little bit	No	Don't know	Total
Male	50	33	53	9	145
Female	29	9	30	6	74
Total	79	42	83	15	219

Chi-Square test

	value	df	Asymp.sig. (2-sided)
Pearson chi-square	3.634[a]	3	.304
Likelihood Ratio	3.852	3	.278
Linear by linear Association	.047	1	.829
N of valid cases	219		

0 cells (0.0%) have expected count less than 5. The minimum expected count is 5.07.

परिगणित मान x^2 = 3.634 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम सारणी मान 7.815 से कम है अतः यह .05 स्तर पर सार्थक नहीं है व 11.341 से भी कम है अतः यह .01 स्तर पर सार्थक नहीं है। उक्त विवरण को यदि लिंग समूह के आधार पर मापें तो इस परिकल्पना में कौशल योजना से अशिक्षित महिलाओं के रोजगार स्तर में वृद्धि नहीं हो रही है क्योंकि ज्यादातर अशिक्षित महिलायें पुरूष की अपेक्षा रोजगार पर नहीं जाती है। यानि H_1 अस्वीकृत हो गया और H_0 स्वीकृत हो गया ।

Case processing summary

	Case					
	Valid		Missing		Total	
	N	percent	N	percent	N	Percent
Age group Q	219	100.0	0	0.0	219	100.0

Age group Question cross tabulation

	Question				
Age group	Yes	Little bit	No	Don't know	Total
15-20years	57	24	45	10	136
20-25years	17	16	32	5	70
25-30years	2	2	3	0	7
30-35years	3	0	3	0	6
Total	79	42	83	15	219

Chi-Square test

	value	df	Asymp.sig. (2-sided)
Pearson chi-square	9.732[a]	9	.373
Likelihood Ratio	11.912	9	.218
Linear by linear Association	1.200	1	.273
N of valid cases	219		

9 cells (56.20%) have expected count less than 5. The minimum expected count is .41.

परिगणित मान x^2 = 9.732 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम सारणी मान 16.919 से कम है अतः यह .05 स्तर पर सार्थक नहीं है व 21.666 से कम है अतः यह .01 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। उक्त विवरण को यदि उम्र वर्ग समूह के आधार पर मापें तो इस परिकल्पना में कौशल योजना से अशिक्षित महिलाओं के जीवन में प्रशिक्षण के पश्चात् रोजगार के ज्यादा अवसर प्राप्त नहीं हो रहें है क्योकि इसमें ज्यादातर पुरूष वर्ग सम्मिलित है। यानि H_1 अस्वीकृत हो गया और H_0 स्वीकृत हो गया ।

Case processing summary

	Case					
	Valid		Missing		Total	
	N	percent	N	Percent	N	Percent
Marital status Q	219	100.0	0	0.0	219	100.0

Marital status Question cross tabulation

	Question				
Marital status	Yes	Little bit	No	Don't know	Total
Married	4	1	12	0	17
Divorce	1	0	0	0	1
Unmarried	74	41	71	15	201
Total	79	42	83	15	219

Chi-Square test

	value	df	Asymp.sig. (2-sided)
Pearson chi-square	10.687[a]	6	.099
Likelihood Ratio	11.834	6	.066
Linear by linear Association	1.323	1	.250
N of valid cases	219		

6 cells (50.0%) have expected count less than 5. The minimum expected count is .07.

परिगणित मान x^2 = 10.687 का मान .05 व .01 स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक न्यूनतम सारणी मान 12.592 से कम है अतः यह .05 स्तर पर सार्थक नहीं है व 16.812 से भी कम है अतः यह .01 स्तर पर सार्थक नहीं है। उक्त विवरण को यदि वैवाहिक स्तर पर मापें तो इस परिकल्पना में कौशल योजना से अशिक्षित महिलाओं के प्रशिक्षण के पश्चात् रोजगार के ज्यादा अवसर प्राप्त नहीं हुये । यानि H_1 अस्वीकृत हो गया और H_0 स्वीकृत हो गया ।

निष्कर्ष

अब जब इस ओर शनैयेः शनैये सुधार हो रहा है तो ये सुधार एक तरफा न होके साझाँ होना चाहिए जिसमें पुरूषों व महिलाओं का समरूप योगदान हो। किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए पाँच तत्व अति आवश्यक है।– ''राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक साधन, सामाजिक अवसर, पारदर्शिता और सुरक्षा''; नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ0 अमर्त्य सेनद्ध, अब यदि झाँसी मण्डल में शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ा दिया जायें तो यहाँ के युवा भी अवसरों को प्राप्त कर क्षेत्र का विकास कर सकेंगें।

शासन द्वारा कौशल योजना की उत्पत्ति कर देश की जनता और महिलाओं को एक सस्त्र प्रदान किया गया है कि वें आगें आये और अपने सपनों को पूरा कर सकें। करोना के पूर्व कौशल केन्द्र निर्मित किये गये थे किन्तु इस के पश्चात् स्थिति को मदेद्नज़र रखकर केन्द्रों की संख्या को बढ़ाया गया जिससे जिज्ञासु बच्चों को ज्यादा से ज्यादा कुशल बनाया जा सकें।

यदि एक केन्द्र में 120 सीटें है तो उसमें महिलाओं को प्राप्त आरक्षण 33 प्रतिशत के आधार पर उन्हें 45 सीटें प्राप्त होती है शेष पुरूष वर्ग को प्राप्त होती है। जबकि इस ओर विशेष रूप से महिलाओं के लिये कौशल केन्द्र निर्मित होने चाहिये, किन्तु यदि ऐसे केन्द्र है भी तो उसमें सभी कोंस नही है सिवाये सिलाई–कड़ाई और ब्यूटिशियन कोर्स के।

कौशल योजना में गरीब बच्चों को आगे लाने का प्रयास किया जा रहा है जिसमें यदि महिलाओं के आंकड़ों का सर्वे किया जाये तो हमनें पाया कि कुशल महिलाओं में से केवल 50–60 प्रतिशत महिलायें ही रोजगार प्राप्त करती है।

इनके लिए कौशल रोजगार मेला भी आयोजित किया जाता है जिसमें कम्पनियाँ इन्हें आमत्रिंत करती है किन्तु कुछ ही महिलायें इस ओर अग्रसर होती है शेष महिलाओं को मनः स्थिति को समझनें के बजाये दबाया जाता है।

ये झाँसी मण्डल की ही नहीं पूरें देश की विडम्बना है कि लड़कियों को सामाजिक दायरें में इतना जकड़ रखा है कि वें स्वंम पिछे हटकर सहज स्वीकार कर लेती है कि वें रोजगार पर नहीं जायेगी।

कभी शादि के नाम पर कभी भाई के मना करने पर, कभी पिता के मना करने पर ये लड़कियां मन मसोस लेती है, माँ से तो पुछा ही नहीं जाता और वें रोजगार पर लगने को मना कर देती है। एक और बहुत बढ़ा कारण है लड़कियों के पिछे हटने का वो है उनके चरित्र पर प्रहार। जिसके चलते वे न चाहते हुए भी दुसरे क्षेत्र व शहर में रोजगार प्राप्त होने के पश्चात् भी मना कर देती है। आज की उपयोगिता को समझतें हुऐं अब इस ओर और सख्त कदम उठानें की आवश्यकता है।

सन्दर्भ

1. ओम प्रकाश कश्यप, 2009 ''एडम स्मिथः आधुनिक अर्थशास्त्र का निर्माता'' 2009
2. आखरमाला, 2015 ''एडम स्मिथः आधुनिक अर्थशास्त्र का निर्माता'' 2015
3. डॉ0 अर्चना गौर, 2010 ''इक्कीसवीं सदी में प्रौद्यौगिक विकास'' पृष्ठ सं. 154
4. अशोक कुमार प्रसाद, 2000 ''21वीं सदी में भारत की दशा एंव दिशा'' पृष्ठ सं. 156
5. मनीषा सिंह और मंजरी ढ़ामेले, (2012), "A study on skill india and its impact on employment" पृष्ठ सं. 398 ।
6. शेफालिका राय, (2017), ''कौशल विकास के प्रभाव एंव नीति आयोग'' पृष्ठ सं. 517।
7. डॉ0 वर्षा राहुल, (2020),'' भारत में बेरोजगारी की समस्या एंव सरकारी प्रयास'' पृष्ठ सं. 228 ।
8. डॉ0 वर्षा राहुल, (2013), ''भारत का औद्योगिक विकास'' पृष्ठ सं. 128।
9. काशी प्रसाद त्रिपाठी, (2011), ''बुन्देलखण्ड के तालाबों एंव जल प्रबंधन का इतिहास'' 31 दिसम्बर 2011।